International Journal of Physical and Social Science
Vol. 9 Issue 1, January 2019
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# भारत के प्राचीन इतिहास–लेखक

सुरेश कुमार
यू0 जी0 सी0 नेट उत्तीर्ण (इतिहास)
सीतामढ़ी बिहार :843001

---

हमारे प्राचीन साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कई एक अपने नाम से ही प्रसिद्ध हैं और उनके रचयिता के बारें में हमें कोई जानकारी नहीं है। ऐसी कृतियों को काल्पनिक नाम दिये गये है। जिनके नाम–निर्धाराण में असमंजस की स्थिति प्राप्त हुई है उनके लेखक के रूप मे हमने व्यास और ब्रह्मा (ईश्वर) का ही नाम दे डाला। धार्मिक क्षेत्र में तो इससे भी काम चल सकता है, किन्तु जहाँ तक इतिहास की बात है, इसमें ऐसे नाम नहीं चल सकते। इसलिए हमने केवल 'उन्हीं' को प्राचीन भारत के इतिहास लेखन की श्रेणी में रखने का प्रयास किया है जिनका हमें कुछ–कुछ जीवन चरित्र प्राप्त हो पाया है और जिनकी रचना (कृति) मिल सकी है। अतिप्राचीन और प्राचीन– ये दो समय हमें भारतीय इतिहासकारों के विषय में विचार करने को मिलते है। यदि हम अतिप्राचीनकाल में जाते है तो वहाँ हमें भीष्म, शुक्र जैसे इतिहासकार मिलते हैं और जब कुछ प्राचीनकाल में जाकर झाँकते हैं तो हर्षचरित के रचयिता बाणभट्ट आदि मिलते हैं। इन सभी को हमने अपने अध्ययन में लिया है और 'भारत के प्राचीन इतिहास–लेखकों' कें प्रतिष्ठित किया है। आगे, उनका जीवन–चरित्र और इतिहास–दर्शन प्रस्तुत है।

**भीष्म** : भीष्म कुरू–राज शान्तुन के द्वारा गंगा नदी के गर्भ से उत्पन्न देवव्रत, गांगेय, जाह्मवीय, भागीरथी पुत्र आदि कहे जाने वाले एक ऐसे महापुरूष थे जो भयकंर (भीष्म) प्रतिज्ञा करने के कारण 'भीष्म' कहे जाने लगे थे। पिता के सुख के लिये वे आजन्म अविवाहित और राज्यत्यागी बने रहे। भीष्म के प्रतिज्ञाबद्ध होने पर ही शान्तुन सत्यवती को प्राप्त कर सके थे और उन्होंने भीष्म को वरदान दिया था कि वह अपनी इच्छा से ही मृत्यु को प्राप्त होंगे। महाभारत में भीष्म के जीवन–चरित के विषय में विस्तार से लिखा मिलता है।

**शुक्र** : प्राचीन भारत के इतिहास लेखकों में भीष्म के बाद दूसरा नाम शुक्र का आता है। शुक्र को हम उनकी उस कृति के सातत्य से जानते और समझते हैं, जिसे 'शुक्रनीति' कहा गया है। शुक्रनीति का नाम हमें 'कामन्दकीय नीतिसार' नाम के साथ मिलता है। शुक्र के माता–पिता या आवास आदि के विषय में कहीं भी कोई स्पष्ट बात नहीं लिखी मिलती और न ही यहीं लिखा मिलता है कि उन्होंने अपने 'शुक्रनीति' की रचना कब की थी। परन्तु, पुस्तक का अध्ययन करने पर हम पाते है कि शुक्रनीति में 2200 श्लोक हैं। यह संख्या उसी पुस्तक के चौथे अध्याय में उल्लेखित है।

**बाणभट्ट** : अपने महाकाव्य 'हर्षचरित' के लिए ख्यात, महाकवि बाण का आविर्भाव 7वीं सदीं के आरम्भ में हुआ था। वह भार्गव ब्राह्मण थे। इतिहास–लेखन कला उन्हें वंश–परम्परा से उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। बाण के परिवार पर पुराणों का प्रभाव पड़ा था। हर्षचरित में बाण ने अपने पूर्वजों का क्रम यह बतलाया है– कुबेर, पाशुपत, अर्थपति, चित्रभानु एवं बाण। कादम्बरी में यह क्रम भिन्न है।

**विल्हण** : इनका जन्म काश्मीर के प्राचीन अग्रहर स्थली 'खोनमुख' (खोनर्मुह) उपनगर में सन् 1040 ई0 में हुआ था। ये कौशिक गोत्र सारस्वत ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम ज्येष्ठकलश और माता का नाम नागदेवी था। पिता मध्यदेशी ब्राह्मणों के परिवार से सम्बद्ध थे। वे व्याकरण के विद्वान थे। उनके भाई उच्च कोटि के कवि थे। राजतरंगिणी के अनुसार बिल्हण के पूर्वज गोनन्द वंश के गोपादिता द्वारा मध्यदेश से लाकर कश्मीर में बसाये गये थे और जो पवित्र अग्निहोत्री थे। ग्यारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में (प्रायः 1063ई0) जब काश्मीर घाटी में स्थिति अशान्तहो गयी थी और राजकीय संरक्षण का भी अभाव था, विल्हण ने मातृभूमि त्याग दी और मथूरा–कान्यकुब्ज–प्रयाग–वाराणसी आदि स्थानों का भ्रमण किया।

**जयानक** – जयानक को कहीं जयनक और कहीं जगनक भी लिखा गया है। वह कश्मीरी चरित–लेखकों में से एक थे। वह भार्गव–वंशीय कश्मीरी ब्राह्मण थे। वह स्वयं अपने को ऋषि उपमन्यु के कुल का बतलाते है। काश्मीर से

चलकर चाहमान दरबार में वह तराईन के प्रथम युद्ध के पूर्व आये थे, जहाँ उनका जोरदार स्वागत वहाँ के चाहमान नरेश, राजकवि पृथ्वीभट्ट तथा अन्य अधिकारियों ने किया था। जयानक ज्योतिष, तर्क, व्याकरण तथा आगमिक एवं वैदिक परम्पराओं के ज्ञाता थे। वह एक विद्वान कवि थे। कादम्बरी, किरातार्जुनीय तथा रघुवंश के साथ ही वाल्मीकि के रामायण से वे अधिक प्रभावित एवं प्रेरित थे। उन्होंने भास, व्यास, वाल्मीकि की वंदना भी की है जिससे उक्त बात स्वतः सिद्ध हो जाती है।

**कल्हण** – कल्हण के जीवन–वृत्त के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ता, परन्तु समकालीन उपलब्ध स्त्रोतों के आधार पर विद्वानों ने यह लिखा है कि कल्हण एक काश्मीरी ब्राह्मण थे तथा भार्गव कुल की सारस्वत शाखा से सम्बद्ध थे। कल्हण की प्रसिद्धि उनकी पुस्तक 'राजतरंगिणी' है। कल्हण ने इसे 1148 ई0 में लिखना आरम्भ किया और लगभग दो वर्षों में पुरा कर लिया। इस ग्रन्थ में काश्मीर का इतिहास है, किन्तु इसमें प्रायः 8000 संस्कृत छन्द और 8 तरंग (सर्ग) है। इसका प्रामाणिक संस्करण, अनुवाद आरेल स्टीन द्वारा किया गया।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. परमात्माशरण : प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, पृष्ठ 19।
2. बेनी प्रसाद : थियरी ऑफ गवर्नमेंट इन एंशियएन्ट इण्डिया, पृष्ठ 245/46।
3. घोषाल, यू0एन0ए0 : हिस्ट्री आफ इण्डियन पॉलिटिकल आइडियाज, पृष्ठ 494/–95।
4. शोरिंग, एम0ए0 : हिन्दू ट्राईब्स एण्ड कास्ट्स, भाग–1, पृष्ठ 69।
5. वार्डर, ए0के0 भारतीय इतिहास लेखन की भूमिका, अध्याय–7।
6. पाठक एंशियएन्ट हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 38।
7. वाशम, ए0एल0 दि कश्मीर क्रोनीकल हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया, पाकिस्तान एण्ड सीलोन, पृष्ठ 58।